ISBN: 978-81-949512-6-1

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
(कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग)
दलहन विकास निदेशालय
छठवीं मंजिल, विन्ध्याचल भवन
भोपाल-462004 (म.प्र.)

सत्यमेव जयते

Government of India
Ministry of Agriculture & Farmers Welfare,
Deptt. of Agriculture, Cooperation & Farmers Welfare
Directorate of Pulses Development
6th Floor, Vindhyachal Bhavan
Bhopal - 462004 (M.P.)

E-mail: dpd.mp@nic.in, Telefax: 0755-2571678, Phone: 0755-2550353/ 2572313

मूंग

वैज्ञानिक नामः विग्ना रेडिएटा एल.

क्षेत्रफल : 40.34 लाख हे.
उत्पादन : 19.48 लाख टन
उपज : 483 कि.ग्रा./हे.

(औसत 2014–15 से 2018–19)

सर्वोच्च उत्पादन –
> 24 लाख टन से अधिक (2018–19)

मूंग का क्षेत्र उत्पादन एवं उपज (2010–11 से 2018–19)

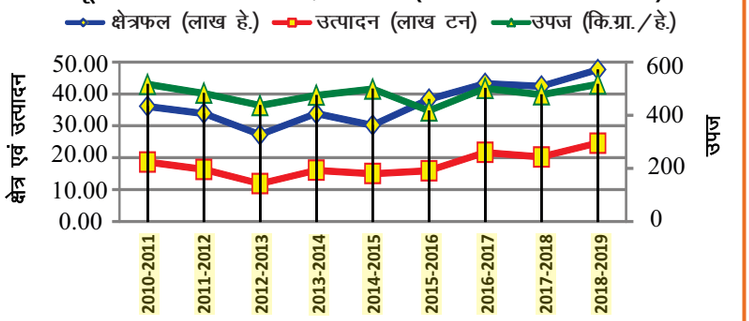

प्रमुख राज्य (औसत : 2014–15 से 2018–19)

(क्षेत्रफलः लाख हे., उत्पादन : लाख टन, उपज : कि.ग्रा./हे)

मुख्य राज्य	क्षेत्रफल	% योगदान	उत्पादन	% योगदान	उपज
राजस्थान	16.16	40	7.66	39	474
मध्य प्रदेश	3.54	9	2.19	11	621
महाराष्ट्र	4.08	10	1.55	8	380
बिहार	1.71	4	1.12	6	652
आन्ध्र प्रदेश	1.55	4	1.04	5	670
उपरोक्त योग	**27.04**	**(67%)**	**13.57**	**(70%)**	**502**
सम्पूर्ण भारत	**40.34**		**19.48**		**483**

प्रमुख जिले (2018–19)

प्रमुख राज्य	प्रमुख जिले
राजस्थान (90%)	नागोर, जोधपुर, पाली, चुरू, अजमेर, जयपुर, टोंक, श्रीगंगानगर, झुंझनु
मध्य प्रदेश (65%)	रीवा, जबलपुर, धार, दमोह, भिंड, रायसेन, अगर मालवा, होशंगाबाद, बड़वानी, सतना, विदिशा, सीधी, शिवपुरी
महाराष्ट्र (70%)	अकोला, जलगांव, नांदेड़, अहमदनगर, परभनी, बुलढाणा, अमरावती, ओसमानाबाद, सतारा, नासिक, जालना
बिहार (81%) (2017–18 के आंकड़े)	सुपौल, मधेपुरा, मुजफ्फरपुर, मधुबनी, सहरसा, वैशाली, दरभंगा, अररिया, समस्तीपुर, नवादा
आन्ध्रप्रदेश (95%)	गुंटूर, श्रीकाकुलम, प. एवं पू. गोदावरी, कृष्णा, विजियानगरम, नीलोर, अनंथपुरम

आर्थिक महत्व : उच्च गुणवत्ता वाले प्रोटीन का उत्कृष्ट स्रोत (25%) उच्च पाचनशक्ति वाला होता है। राइबोफ्लेविन, थियामिन और विटामिन सी (एस्कॉर्बिक एसिड) का अच्छा स्रोत। वायुमंडलीय नाइट्रोजन (30–40 किलो/हेक्टेयर) स्थिरीकरण करती है। मृदा क्षरण को रोकती है। कम अवधि की फसल होने के कारण, यह कई गहन फसल चक्रों में लेने हेतु उपयुक्त है।

फसल उत्पाद :

- साबुत अनाज, अंकुरित एवं दाल के रूप में विभिन्न प्रकार से उपभोग किया जाता है।
- नमकीन उत्पाद, मिठाइयां, खिचड़ी, दूध उत्पाद, अंकुरित अनाज।
- बीज की भूसी को पानी में भिगोकर पशु आहार के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।
- मूंग को हरी खाद की फसल के रूप में भी इस्तेमाल किया जाता है।

उन्नत प्रजातियां :

वर्ष	प्रजातियां	वर्ष	प्रजातियां
2009	आई.पी.एम. 02–3, पी.के.वी. ए.के.एम. 4, पूसा 0672, एम.जी.जी. 347, एम.जी.जी. 207, वी.बी.एन. (जी.जी.) 3	2016	पूसा 1371, आई.पी.एम. 410–3 (शिखा), आई.पी.एम. 205–7 (विराट), एस.एम.एल. 1115, एम.एच. 318, उत्कर्ष (के.एम. 11–584), पन्त मूंग 8 (पी.एम. 09–6), यादादरी (डब्ल्यू.जी.जी. 42), श्री रामा (एम.जी.जी. 351), एम.एस.जे. 118 (केशवानन्द मूंग 2), आर.एम.जी. 975, एम.एल. 2056, जी.बी.एम. 1
2010	आई.पी.एम. 02–14, बसन्ती, पेरीमूंग, के.एम. 2195, टी.एम. 2000–2, एस.एम.एल. 832	2018	जी.एम. 6, के.एम. 2328, पूसा 1431, एस.जी.सी. 16 (रूपोहि), जी.एम. 5, गुजरात मूंग–7, वर्षा (आई.पी.एम. 2 के. 14–9), कनिका (आई.पी.एम. 302–2), त्रिपुरा मूंग 1 (टी.आर.सी.एम. 131)
2013	शालीमार मूंग–2, सी.ओ. (जी.जी.) 8	2019	वी.बी.एन. 4 (वी.जी.जी. 10–008), पंत एम 9 (पी.एम. 09–11), एस.एम.एल. 1827
2014	डी.जी.जी.वी. 2, एम.एच. 421, एस.जी.सी. 16, बी.जी.एस. 9 (सोमनाथ)	2020	आई.पी.एम. 512–1 (सूर्या), एम.एच.1142, के.एम. 2342 (आजाद मूंग 1), आई.पी.एम. 312–20 (वसुधा), आई.पी.एम. 409–4 (हीरा)

प्रकाशक : निदेशक, दलहन विकास निदेशालय, भारत सरकार, भोपाल, म.प्र.
वेबसाइट : www.dpd.gov.in

भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
(कृषि, सहकारिता एवं किसान कल्याण विभाग)
दलहन विकास निदेशालय
छठवीं मंजिल, विन्ध्याचल भवन
भोपाल-462004 (म.प्र.)

सत्यमेव जयते

Government of India
Ministry of Agriculture & Farmers Welfare,
Deptt. of Agriculture, Cooperation & Farmers Welfare
Directorate of Pulses Development
6th Floor, Vindhyachal Bhavan
Bhopal - 462004 (M.P.)

E-mail: dpd.mp@nic.in, Telefax: 0755-2571678, Phone: 0755-2550353/ 2572313

बुवाई समय : खरीफ : जून का अंतिम सप्ताह से जुलाई के प्रथम सप्ताह या मध्य जुलाई तक
रबी : अक्टूबर का प्रथम से द्वितीय सप्ताह
बसंत/ग्रीष्म (जायद) : 15 फरवरी से मार्च का प्रथम सप्ताह

बुवाई विधि : हाथों द्वारा : पंक्ति बुवाई, छिड़काव विधि
मशीन द्वारा : सीड ड्रिल की मदद से रेज्ड बेड में बुवाई

अंतराल : खरीफ– 45X10 से.मी., रबी/ग्रीष्म– 30 X 10 से.मी.

बीज गहराई : 5–7 से.मी.

बीज दर : खरीफ – 15–20 कि.ग्रा./ हे., रबी/ग्रीष्म – 25–30 कि.ग्रा./हे.

बीजोपचार : बुवाई से 2 दिन पहले बीजोपचार करें।

रोग : कार्बोक्सिन @ 2 ग्राम/कि.ग्रा. बीज

कीट : इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्ल्यू.एस. @ 7 ग्रा./कि.ग्रा.

कल्चर एवं सूक्ष्म पोषक तत्व : राईजोबियम + पी.एस.बी. प्रत्येक की 5 ग्राम/कि.ग्रा.

मिट्टी का प्रकार : यह अच्छी तरह से अच्छी जल निकासी वाली कपास की काली मिट्टी से बलुई दोमट मिट्टी में अच्छी प्रकार से उगायी जा सकती है। मूंग जल भराव की स्थिति के लिए बहुत संवेदनशील है।

जलवायु : फसल को उच्च तापमान, कम आर्द्रता और लगभग 60–80 से.मी. की मध्यम वर्षा की आवश्यकता होती है। प्रारंभिक वनस्पतिक अवस्था के दौरान जलभराव जड़ विकास और नाइट्रोजन स्थिरीकरण के लिए घातक होता है।

पौध पोषक तत्व : 15–20 कि.ग्रा. नाइट्रोजन, 30–40 कि.ग्रा. फॉस्फोरस, 20 कि.ग्रा. सल्फर/हे. बुवाई के समय

बोरान : 5 किलो बोरेक्स/हे. या 3.6 कि.ग्रा., डाई–सोडियम टेट्रा बोरेट पेंटा हाइड्रेट उपयोग करें);

मैंगनीज : बीज को 2% मैंगनीज सल्फेट के घोल में डुबायें या 1% मैंगनीज सल्फेट का पर्णीय छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन : i) प्रथम निंदाई– बुवाई के 20–25 बाद, दूसरी– बुवाई के 45 बाद ii) बुवाई के बाद एवं अंकुरण से पूर्व पेंडिमथालिन @ 700 ग्राम सक्रिय तत्व 800–1000 प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर प्रति हे. का छिड़काव; iii) संकरी और चौड़ी पत्ती के खरपतवार को नियंत्रित करने के लिए इमेजाथापायर (परसूट) 100 ग्राम/हेक्टेयर का बुवाई के 20 दिन बाद छिड़काव करें।

उर्वरक का प्रयोग मृदा परीक्षण रिपोर्ट पर आधारित होना चाहिए।

सिंचाई : खरीफ– फली बनने के समय एक सिंचाई।
बसंत/ग्रीष्म (जायद)– प्रथम : फूल आने से पहले (बुवाई के 20–25 दिन बाद),
द्वितीय : फली बनने के समय पर (बुवाई के 40–45 दिन बाद)

फसल प्रणाली :

फसल चक्र : i) धान–गेहूँ– मूंग (ग्रीष्म); ii) मक्का+मूंग – गेहूँ–मूंग; iii) मक्का (अगेती) आलू (अगेती) गेहूँ–मूंग; iv) गन्ना + मूंग (ग्रीष्म 1:2); v) कपास + मूंग (1:3)

अंतर्वर्ती

खरीफ : मक्का, बाजरा, अरहर, कपास

बसंत/ग्रीष्म (जायद) – गन्ना (1:2); सूरजमुखी (2:6)

बीज प्रतिस्थापन दर :

फसल	2011	2012	2013	2014	2015	2016
मूंग	30.29	32.41	49.63	23.55	30.72	33.55

कीट व्याधि और रोग प्रबंधन :

प्रमुख रोग	प्रबंधन
पीला मोजेक वायरस	i) रोगग्रस्त पौधों को निकाल दें; ii) प्रतिरोधी किस्में उगाएं– नरेंद्र मूंग 1, पंत मूंग 3, पी.डी.एम. 139 (सम्राट), पी.डी.एम. 11, एम.यू.एम. 2, एम.एल. 337; iii) यदि आवश्यक हो तो 10–15 दिनों के अंतराल पर ऑक्सीडिमेटोन मिथाइल 25 ईसी @ 2.0 मिली./ली. के साथ स्प्रे करें।
पत्ती कुंचन	i) इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्ल्यू.एस. @ 5 मिली./कि.ग्रा. से बीजोपचार करें। ii) संक्रमित पौधों को बाहर निकाल दें। iii) प्रतिरोधी किस्में जैसे डी–3–9, के 12, एम.एल. 26, आर.आई. 59, टी–44 उगाएं।
एंथ्रेक्नोज	i) बीज जनित संक्रमण के लिए 58 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान पर गर्म पानी में 15 मिनट के लिए बीजोपचार करें। ii) फफूंदनाशक दवा जैसे मेंकोजेब 75 डब्ल्यू.पी. 2.5 ग्रा./ली. या कार्बेन्डाजिम 50 डब्ल्यू.पी. को 1 ग्रा./ली. का छिड़काव करें तथा 15 दिन के बाद दोहराएं।

कटाई : जब फली काले रंग में बदल जाती है, तो दो से तीन तुड़ाई की जाती है। तुड़ाई केवल सुबह के समय के दौरान किया जाना चाहिए। थ्रेसिंग यार्ड में थ्रेसिंग की जानी चाहिए और बीजों को अलग करके साफ किया जाना चाहिए।

फसल आर्थिकी :

मानक	रबी
उपज (नार्मल 2014–15 से 2018–19)	4.83 क्विंटल/हे.
सकल आय (न्यूनतम समर्थन मूल्य पर)	रू. 34757/हे.
खेती की लागत (CoC A_2+FL)*	रू. 19375/हे.
उत्पादन की लागत	रू. 4011/क्विंटल

*CoC –कृषि लागत; A_2–वास्तव में किया गया भुगतान; FL- पारिवारिक श्रम का प्रतिष्ठित मूल्य।

प्रमुख कीट	प्रबंधन
सफेद मक्खी	i) चिपचिपे प्रपंच स्थापित करें; ii) कपास के साथ अंतर्वर्ती फसल लें; iii) सफेद मक्खी के प्रकोप को कम करने के लिए बेरियर फसल के रूप में मक्का, ज्वार या बाजरा उगाएं।
तना मक्खी और चने की इल्ली	i) फसल चक्र, मिट्टी चढ़ाएं, वैकल्पिक पौधों (खरपतवार) को नष्ट करें। ii) बुवाई के 15 दिन बाद इमीडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. @ 0.2 मिली./लीटर या थायोमेथोक्साम 25 डब्ल्यू.जी. @ 0.3 ग्राम/लीटर का छिड़काव करें।

न्यूनतम समर्थन मूल्य :

(रू./क्विंटल)

फसल	2015–16	2016–17	2017–18	2018–19	2019–20	2020–21
मूंग	4850*	5225^	5575@	6975	7050	7196

*रू. 75/– प्रति क्विंटल का बोनस सन्निहितय ^रू. 200/– प्रति क्विंटल का बोनस सन्निहित; @ रू. 150/– प्रति क्विंटल का बोनस सन्निहित

संकलन एवं संपादन
• डॉ. पु.के. तिवारी, निदेशक
• डॉ. पु.के. शिवहरे, संयुक्त निदेशक
• डॉ. संदीप सिलावट, वरिष्ठ तकनीकी सहायक
• श्री सरजू पल्लेवार, सांख्यिकी अन्वेषक
प्रकाशन वर्ष 2021